।। अर्हम् ।।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)

दूरभाशः 01565-224600, 224900

ई-मेल : jstsdgh01565@gmail.com

अध्यात्म विद्या ही श्रेश्ठ है - युवाचार्य महाश्रमण

-तुलसीराम चौरड़िया (मीडिया संयोजक)-

श्रीडूँगरगढ़ 10 जनवरी : दुनियां में विद्या का महत्व है। छात्र विद्या अर्जन के लिए सुदुर क्षेत्रों में जाते हैं। विद्या को दो भागों में बांटा जा सकता है। 1. लौकिक विद्या 2. अलौकिक विद्या । जिसका सम्बन्ध आजीविका के साथ है वह लौकिक विद्या के अन्तर्गत आती है तथा जिसका सम्बन्ध आत्मा के साथ है वह अलौकिक विद्या है। उसे अध्यात्म विद्या भी कह सकते है। उक्त विचार युवाचार्य महाश्रमण ने तेरापंथ भवन के प्रज्ञासमवसरण मे प्रवचन के दौरान व्यक्त किये। उन्होनें कहा कि श्रीमद् भागवत गीता के 10वें अध्याय में श्री कृश्ण ने कहा-विद्याओं में मैं अध्यात्म विद्या हूँ। अध्यात्म विद्या सब विद्याओं में श्रेश्ठ होती है। आदमी को आत्मिक :ांति व आनन्द प्राप्त करवाने वाली होती है, स्कूली ि-क्षा में थोड़ा-थोड़ा अध्यात्म का ज्ञान दिया जाना चाहिये। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने जीवन विज्ञान रुशी अवधान देकर ि-क्षा भारत में अध्यात्म विद्या के पक्ष को मजबूत किया है ।

युवाचार्य प्रवर ने कहा कि अध्यात्म वह ज्ञान है जिसके द्वारा राग से विराग की ओर बढ़े, प्रेय से श्रेय की ओर बढ़े। मैत्री का विकास हो जाये। अध्यात्म की चर्चा से आदमी को झकझोरा जा सकता है। अच्छी प्रेरणा से जीवन का पथ प्र-ास्त होता है।

भगवान बुद्ध के पूर्व-जन्म के प्रसंग को प्रस्तुत करते हुए उन्होनें कहा कि विद्यार्थी के रुप में बुद्ध ने इस बात को आत्म-ात कर लिया था कि परमात्मा सब जगह देखता है। इस अध्यात्म विद्या के कारण प्रामाणिकता का वि-ेश गुण उनमें विकसित हो गया था। उत्तराध्ययन के 32वें व 19वें अध्ययन मे अध्यात्म के अनेक सूत्र मिलते है।

इतिहास के प्रसंगों मे आचार्य भारीमल जी के बाल्यकाल व गृहस्थ जीवन की चर्चा की। 10 वर्श की उम्र में वे भीखण जी के सम्पर्क में आये। मुनि दिने-ा कुमार जी ने प्रारंभिक प्रवचन मे सम्यक्त्व के पांचलक्षण बताये। 1. :ाम 2. समवेग 3. निर्वेद 4. अनुकंपा 5. आस्तिक्य ।

सादर प्रका-ानार्थ : -

श्री प्रमोद जी घोड़ावत
सम्पादक, तेरापंथ टाईम्स
नई दिल्ली

तुलसीराम चौरड़िया
मीडिया संयोजक / सहसंयसोजक